यून और
जेड का कंगन

मेरा नाम यून है. मैं कोरिया से आई हूँ,
एक देश जो यहाँ से बहुत दूर है.

अमरीका में आकर बसने के कुछ समय बाद ही मेरा जन्मदिन आया. अपने जन्मदिन पर एक विशेष उपहार-कूदने की रस्सी-पाने की मुझे आशा थी. अपने स्कूल में लड़कियों को ऐसी रस्सी घुमाते और उस पर कूदते और आनंदपूर्वक गाते हुए मैंने कई बार देखा था. मैं भी उनके साथ रस्सी पर कूदना और गाना चाहती थी. लेकिन मैं स्कूल में नई थी, इसलिए अभी तक किसी ने भी मुझे साथ खेलने के लिए नहीं बुलाया था.

मेरे जन्मदिन पर माँ ने मुझे बुलाया. “यून, इधर आओ! मेरे पास तुम्हारे लिए एक उपहार है!”

मैंने ताली बजाई और दौड़ कर माँ के पास आई.

सुंदर कागज़ में लिपटी एक वस्तु माँ ने मुझे दी, जो पतली और चपटी थी.

“जन्मदिन की बधाई!” माँ ने कहा.

कूदने वाली रस्सी चपटी और पतली नहीं होती, मैंने सोचा. अपनी निराशा छिपाने का मैंने पूरा प्रयास किया. “धन्यवाद, माँ,” मैंने मुसकराते हुए कहा.

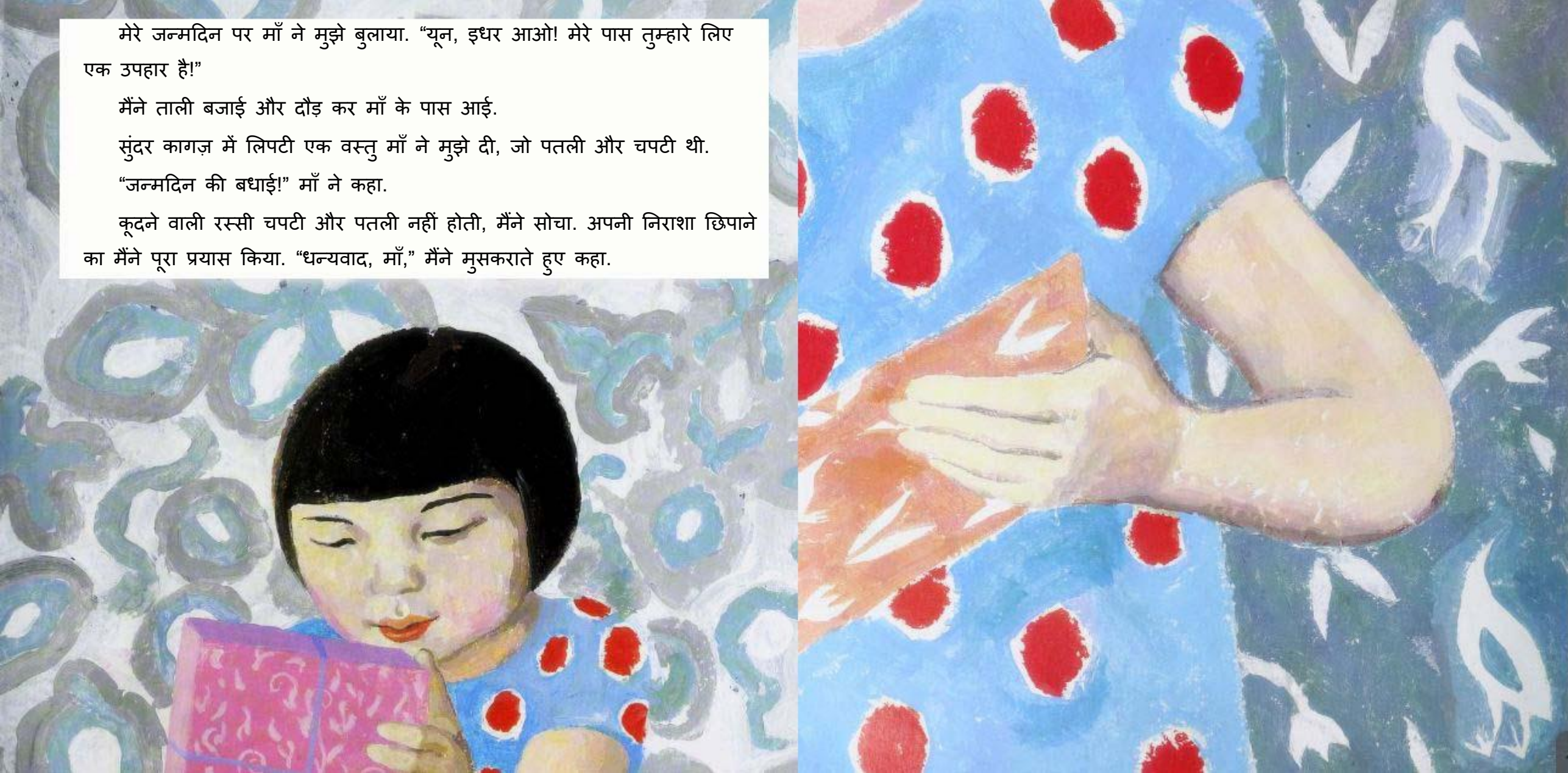

जब मैं उपहार खोल रही थी तो माँ मुझे उत्सुकता से देख रही थी. यह कोरियाई भाषा में कहानी की पुस्तक थी. यह उस छोटी लड़की की कहानी थी जिसे एक शेर ने चकमा दिया था. यह कहानी मैं जानती थी. और मुझे उस बुद्धू लड़की पर हँसी भी आई थी.

"इसके चित्र कितने रंग-बिरंगे हैं," मैंने कहा.

"हाँ, मुझे यह उन चित्रों का स्मरण कराते हैं जो तुम बनाती हो, यून."

मुझे पुस्तक अच्छी लगी पर मन में कूदने वाली रस्सी पाने की इच्छा अभी भी थी.

"और यह रहा तुम्हारे लिए दूसरा उपहार," एक सुंदर डिब्बा देकर माँ ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया. उसके अंदर एक हल्के हरे रंग का कंगन था. मैंने उस बहुत ही मुलायम कंगन को हाथ से छूआ.

"यह जेड का कंगन है, यून," माँ ने कहा. "जब मैं छोटी थी तब मेरी माँ ने यह कंगन मुझे दिया था. आज यह मैं तुम्हें दे रही हूँ."

"यह तो बहुत अद्भुत उपहार है," मैंने कहा. कंगन इतना अद्भुत था कि उसे माँ से लेने में मैं कतरा रही थी.

"देखो, यून," माँ ने कहा. "यहाँ इसके भीतर तुम्हारा कोरियन नाम खुदा हुआ है." उसने मुझे नृत्य करते हुए वह चिन्ह दिखाए जिनका अर्थ होता है, *उज्ज्वल विद्या.*

फिर माँ ने मुझे जेड की कहानी सुनाई. "जेड धरती के अंदर पाया जाने वाला एक बहुमूल्य पत्थर है, लेकिन इसे दिव्य रतन माना जाता है. हरा रंग आनंद और आशा का प्रतीक होता है और ऐसा समझा जाता है कि जेड का आभूषण पहनने से व्यक्ति सौभाग्यशाली बन जाता है. यह सत्य और मित्रता का प्रतिरूप है. मेरी अनमोल बेटी के लिए एक अनमोल रतन," माँ ने कंगन मेरी कलाई पर पहना दिया.

अगले दिन स्कूल में लंच के समय मैं मेज़ के एक तरफ बैठी थी. अन्य कक्षा की एक बड़ी लड़की मेरे निकट आकर बैठ गई.

"अरे," उसने कहा, "तुमने कितना सुंदर कंगन पहन रखा है!"

"धन्यवाद," मैंने कहा.

“आज तुम अकेली हो. मैं तुम्हारी मित्र बनूँगी. क्या तुम मेरे साथ रस्सी पर कूदना चाहोगी?”

कूदने वाली रस्सी? “हाँ, हाँ!” मैंने उत्तर दिया.

“बढ़िया! मैं तुम्हें कूदना सिखाऊँगी. खूब मज़ा आयेगा.”

“हाँ!” अपने नये मित्र की ओर मुस्कराते हुए मैंने कहा. कूदने वाली रस्सी!

लंच के बाद खेलने के लिए हम बाहर की ओर भागे. दूसरी लड़की ने रस्सी का एक सिरा जंगले के साथ बाँध दिया. फिर रस्सी घुमाने के लिए उसने दूसरा सिरा मुझे पकड़ा दिया. वह कूदने और गाने लगी और मैं रस्सी को तेज़, धीरे, तेज़ घुमाती रही. मैं रस्सी घुमाती रही, घुमाती रही. मेरा हाथ थक गया. रस्सी को घुमाना मैंने अच्छे से सीख लिया, लेकिन रस्सी पर कूदने की कला सीखने को मैं उतावली थी.

“मैं कब कूदूँगी?” मैंने पूछा.

“कल,” बड़ी लड़की ने कहा. घंटी बज गई. अब कक्षा में जाने का समय था. लड़की ने रस्सी मुझ से ले ली.

“तुम्हारा कंगन सच में मुझे बहुत पसंद है,” उसने कहा. “अमरीका में मित्र अपनी चीज़ें एक-दूसरे को देते हैं. अगर हम मित्र बनने वाले हैं तो तुम्हें अपना कंगन मुझे देना चाहिए. तुम्हें इसे मुझे पहनने देना चाहिए-बस आज के लिए.”

कंगन, मेरे जन्मदिन का उपहार? अरे नहीं, नहीं, नहीं. मैं इसे नहीं दे सकती थी. मेरी नानी ने यह कंगन मेरी माँ को दिया था और अब यह मेरा था. नहीं, नहीं, मैंने सिर हिला कर मना कर दिया.

“तो....फिर हम मित्र कैसे बन सकते हैं?” बड़ी लड़की ने कहा. “मुझे लगा था कि तुम रस्सी पर कूदना सीखना चाहती हो?”

मैंने जेड का कंगन कलाई से उतार कर अपने हाथ ले लिया. मेरी माँ ने मुझ से कहा था कि यह मुझे सौभाग्यशाली बनायेगा और मेरे अच्छे मित्र बनेंगे. लेकिन इसे किसी को देना मुझे ठीक न लगा.

बड़ी लड़की ने तुरंत कंगन मेरे हाथ से छीन लिया और उसे अपनी कलाई पर पहन लिया. “चिंता न करो,” उस ने कहा. “कल मैं इसे लौटा दूँगी.”

स्कूल से जब मैं घर वापस आई तो मैं सीधे अपने कमरे में चली गई. मुझे देखने के लिए माँ मेरे कमरे में आ गईं. जैसे ही बिस्तर पर बैठ कर मैं अपनी कोरियन कहानी की नई पुस्तक पढ़ने लगी, माँ ने मेरी बाँह को छुआ और घबरा गईं.

“तुम्हारा कंगन कहाँ है, यून?”

लज्जा से मैंने सिर झुका लिया, कुछ कहने का मैं साहस न कर पाई.

“ओह, तुम दुःखी हो. क्या तुम ने उसे स्कूल में खो दिया, यून?”

मैंने अपने कंधे सिकोड़ लिए.

“शायद वह नीचे लुढ़क कर कहीं चला गया होगा और यहीं कहीं छिपा होगा,” उन्होंने अश्रुपूर्ण आँखों से कहा. और वह झुक कर कंगन को मेरे बिस्तर के नीचे ढूँढ़ने लगीं.

“माँ,” उनकी बाँह को खींचते हुए मैंने कहा. “मैं उसे स्कूल में छोड़ आई हूँ. मैं उसे कल ले आऊँगी.”

अगले दिन स्कूल के अहाते में मैं उस बड़ी लड़की की प्रतीक्षा करती रही. वह आई. मेरा जेड का कंगन उसने अभी भी पहन रखा था.

“मेरा कंगन मुझे लौटा दो,” मैंने कहा.

“मैं तुम्हें बाद में दूँगी,” मेरे पास से भागते हुए उसने कहा.

सारी सुबह चिंता से मेरा मन भारी रहा. मुझे समझ ही न आया कि “बिल्ली” शब्द कैसे लिखा जाता था या दो और दो का जोड़ क्या था.

लंच के बाद सारे बच्चे बाहर भागे. बड़ी लड़की को मैंने फिर ढूंढा. “मेरा कंगन तुम्हारे पास है और वह मुझे वापस चाहिए,” मैंने कहा.

“मुझे तंग करना बंद करो! मेरा पीछा मत करो,” उसने मुझे एक ओर धकेला और हँसने लगी.

मुझे लगा मैं अपनी पुस्तक की कहानी की मूर्ख लड़की जैसी थी. मुझे एक बाघ ने चकमा दे दिया था.

अपनी कक्षा में लौट कर मैंने अपने डैस्क पर अपना सिर रख दिया.

“क्या बात है, यून?” मेरी अध्यापिका ने पूछा.

मैंने अपनी अध्यापिका को उस बड़ी लड़की के विषय में बताया और उन्होंने उस लड़की को बुना भेजा.

“क्या तुम्हारे पास कोई ऐसी चीज़ है जो यून की है?” मेरी अध्यापिका ने उससे पूछा. “जो कंगन तुम ने पहन रखा है क्या वह उसका है?”

“नहीं, नहीं!” बड़ी लड़की ने मक्कारी से कहा. “यह तो मेरा है.”

“नहीं! यह मेरे जन्मदिन का उपहार है!” मैंने कहा.

मेरी कक्षा के बच्चे हमारे आसपास इकट्ठे हो गए.

“कल यून ने इसे पहन रखा था,” बालों की चोटी किए हुए लड़की ने कहा.

“हाँ,” चित्तीदार चेहरे वाले लड़के ने कहा. “मैंने भी देखा था.”

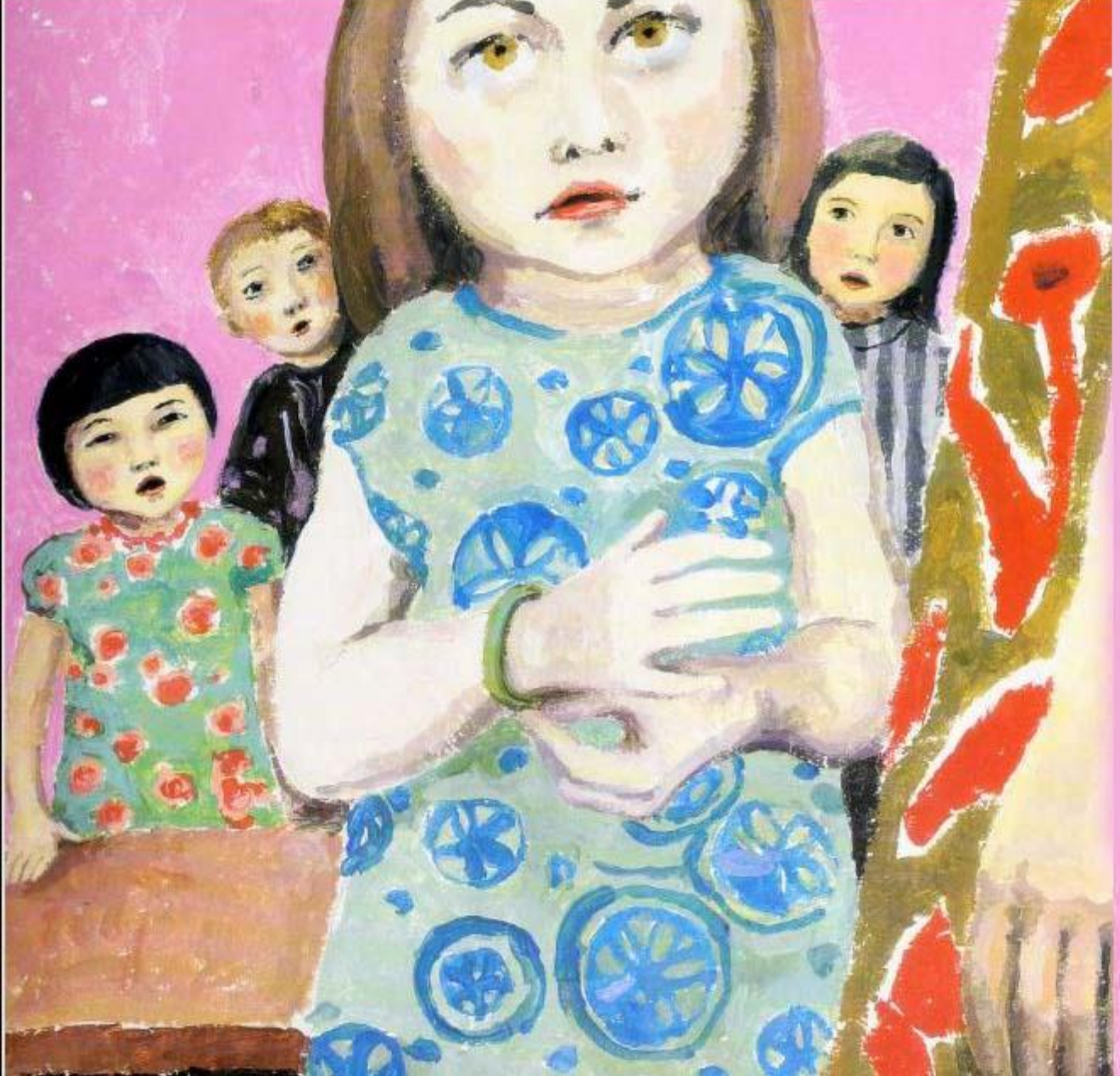

“इस कंगन के विषय में क्या तुम कुछ बता सकती हो, यून?” मेरी अध्यापिका ने पूछा.

“यह मेरी माँ ने मुझे दिया था,” धूर्त लड़की की आँखों में देखते हुए मैंने उत्तर दिया. “यह कंगन करुणा और वीरता का प्रतीक है. यह सच्ची मित्रता का भी प्रतीक है.”

“अब तुम इस कंगन के बारे में कुछ बताओ,” अध्यापिका ने बड़ी लड़की से कहा.

“अह.....यह मुलायम है, हरे रंग का है,” उसने दृढ़ आवाज़ में उत्तर दिया.

मुझे चिंता हो रही थी कि मेरा कंगन मुझे कभी वापस नहीं मिलेगा. मैं *उज्ज्वल विद्या* नहीं थी, मैंने सोचा. इसके बजाय, मेरी माँ ने मेरा नाम *उज्ज्वल मूर्ख* रखना चाहिए था.

फिर एक विचार मेरे मन में आया. मैंने अपनी अध्यापिका के कान में धीमे से कुछ कहा.

“तो इस कंगन के भीतरी भाग को विषय में मुझे कुछ बताओ,” उन्होंने बड़ी लड़की से पूछा.

“अह.....यह मुलायम है, हरे रंग का है,” उसने दोहराया.

अध्यापिका ने उसे कंगन उतारने के लिए कहा. उसे उतारने में लड़की को बहुत परिश्रम करना पड़ा. मेरी अध्यापिका ने कंगन के भीतरी भाग का निरीक्षण किया और वहाँ अंकित नृत्य करते हुए चिन्ह देखे.

“क्या इन चिन्हों का अर्थ तुम जानती हो?” उन्होंने लड़की से पूछा.

“नहीं,” बड़ी लड़की ने कहा. “ओह...मुझे लगा कि यह मेरा है. मेरे पास भी ऐसा ही एक कंगन था. शायद यह यून का होगा.”

अध्यापिका की आँखें बता रही थीं कि बड़ी लड़की के आचरण से वह अप्रसन्न थीं.

फिर अध्यापिका ने जेड का कंगन मेरी कलाई पर पहना दिया. “यह रहा तुम्हारे नाम वाला कंगन, *उज्ज्वल विद्या*.”

और वो बिलकुल मेरे नाप का था.

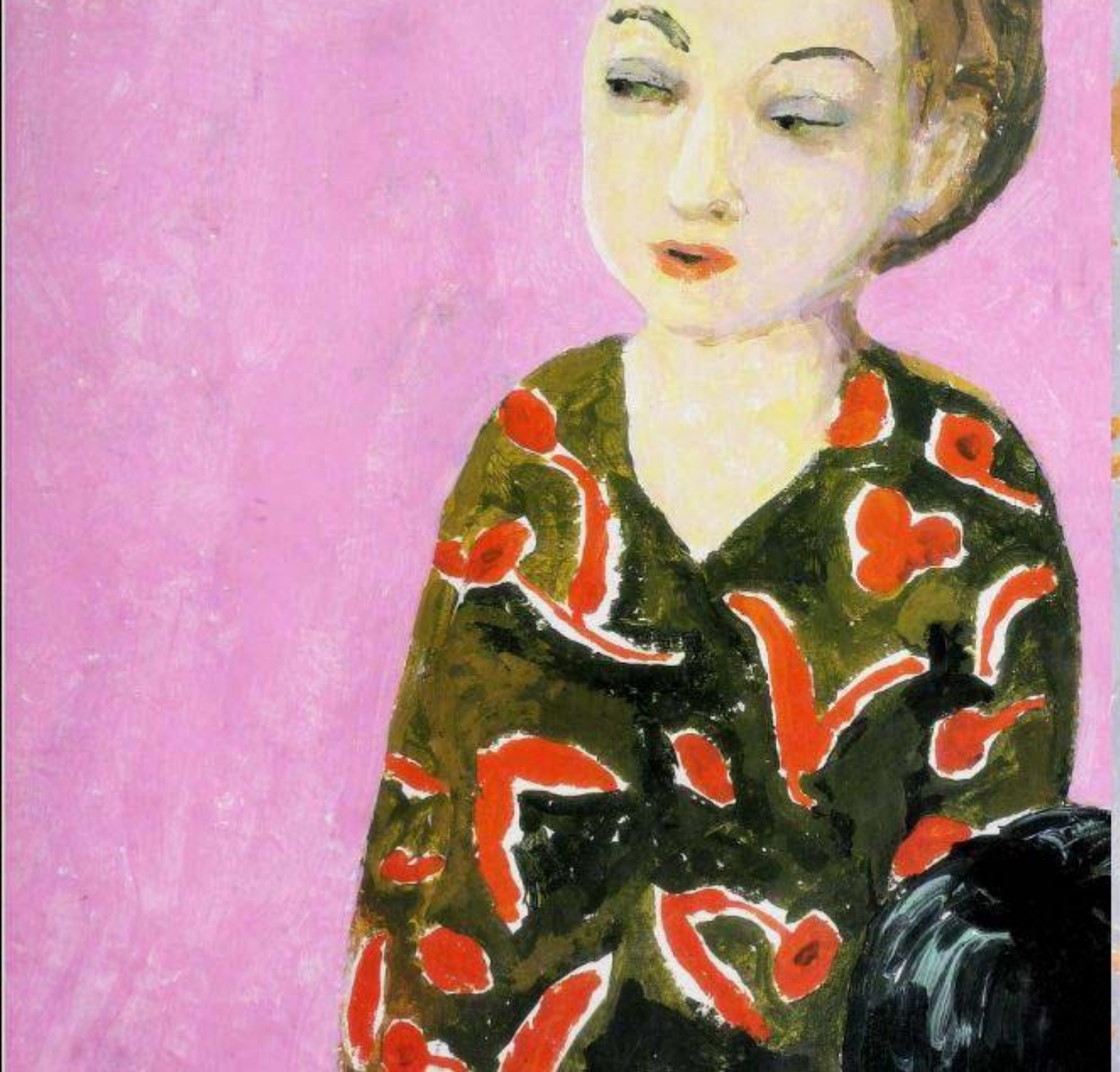

स्कूल से लौटने पर मेरी माँ ने मेरी कलाई पर मेरा कंगन देखा. “अहा! यह स्कूल में था!”

“माँ,” मैंने पूछा, “क्या जेड पहनने से हमारी कामनायें पूरी हो जाती हैं?”

“हाँ,” माँ ने कहा. “ऐसा सब मानते है.” वह मुस्कराईं. “और तुम्हारी क्या कामनायें हैं?”

मैंने कूदने वाली रस्सी और सच्चे मित्र पाने की अपनी इच्छा उन्हें बताई.

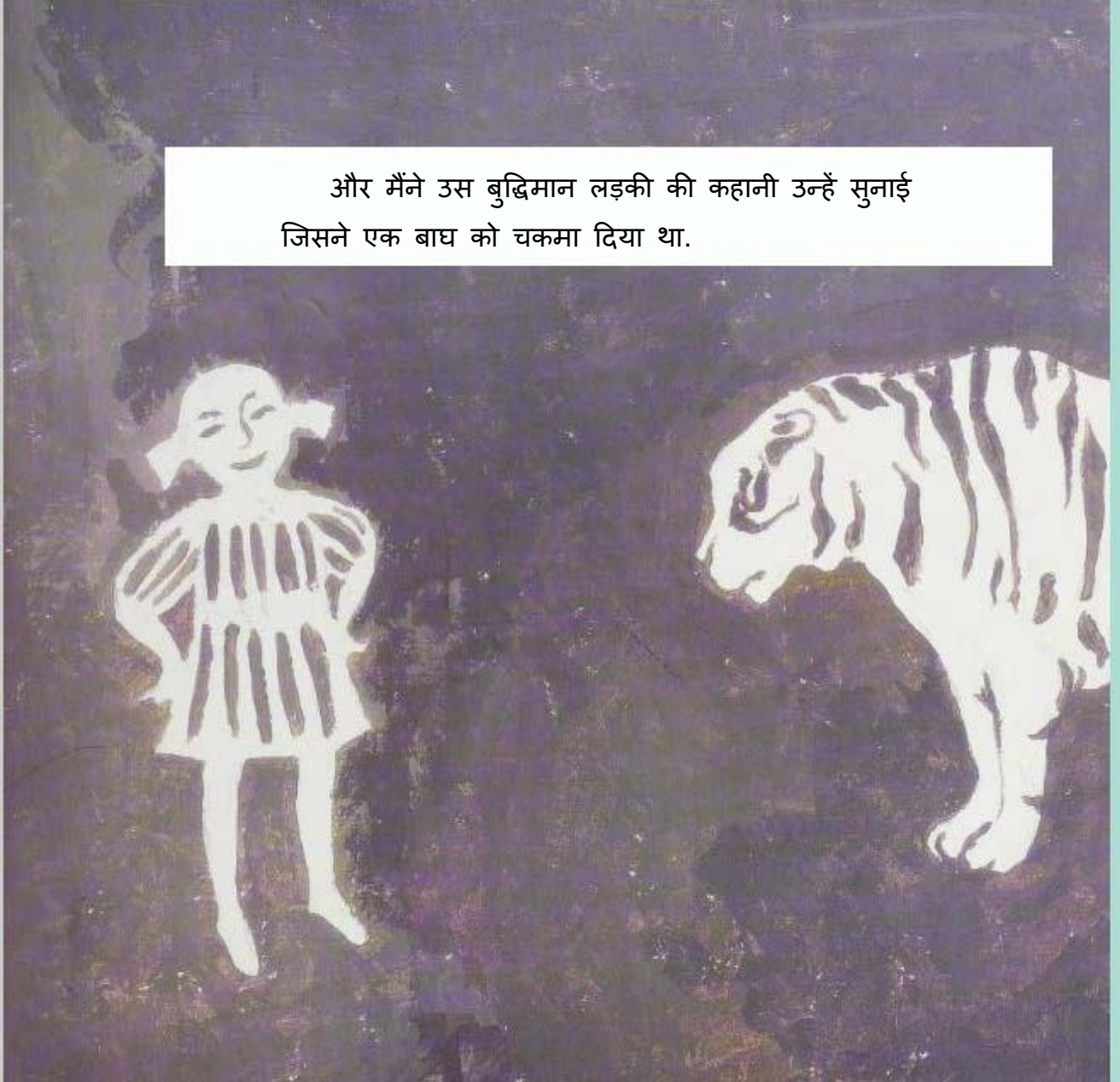

समाप्त